

समग्र बाल विकास और नैतिक शिक्षा: NEP 2023 के अंतर्गत जीवन कौशल का समावेश – एक समीक्षात्मक अध्ययन

Author- कविता परगाओकर*

Affiliation -

डीन शिक्षा संकाय, भाभा विश्वविद्यालय,
भोपाल (मध्य प्रदेश)

Contact No.-

0000000000

Email Address-

000000

Received on 08/11/2025

Revised on 14/11/2025

Accepted on 21/12/2025

Published on 15/12/2025

सारांश (Abstract)

समग्र बाल विकास आधुनिक शिक्षा की वह आधारशिला है, जो संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक तथा शारीरिक पक्षों के संतुलित विकास पर बल देती है। नई शिक्षा नीति (NEP 2023) ने इस समग्र दृष्टिकोण को केंद्र में रखते हुए 'समग्र विकास', 'नैतिक शिक्षा', 'जीवन कौशल' एवं 'अनुभवात्मक शिक्षण' जैसी अवधारणाओं को प्राथमिकता प्रदान की है। नीति स्पष्ट रूप से यह मानती है कि 21वीं सदी के शिक्षार्थियों को केवल शैक्षणिक दक्षताओं तक सीमित रखना पर्याप्त नहीं है; उन्हें जीवन के लिए तैयार करना आवश्यक है। इस लेख में समग्र बाल विकास की अवधारणा, नैतिक शिक्षा की आवश्यकता, NEP 2023 में जीवन कौशलों का समावेश, विद्यालयी स्तर पर कार्यान्वयन की चुनौतियाँ तथा भविष्य की संभावनाओं का विस्तृत समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

Keywords: समग्र बाल विकास, नैतिक शिक्षा, जीवन कौशल, NEP 2023, मूल्य शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम

1. प्रस्तावना :

समकालीन शिक्षा व्यवस्था में बाल विकास का दृष्टिकोण तेजी से व्यापक, समग्र और बहुआयामी होता जा रहा है। पारंपरिक शिक्षा मॉडल मुख्यतः संज्ञानात्मक उपलब्धियों जैसे—पठन, लेखन, गणना तक सीमित था, परंतु 21वीं सदी में यह समझ उभरकर सामने आई है कि बालक को केवल ज्ञान प्रदान करना पर्याप्त नहीं है; बल्कि उसे जीवन के विविध परिस्थितिजन्य व्यवहारों, नैतिक निर्णयों, भावनात्मक लचीलापन (emotional resilience), सामाजिक सहभागिता तथा समस्या-समाधान क्षमता से भी सुसज्जित किया जाना आवश्यक है (UNICEF, 2021)। इस सन्दर्भ में समग्र बाल विकास की अवधारणा, नैतिक शिक्षा का समावेश तथा जीवन कौशलों का विकास ही वह त्रिकोणीय आधार है जो आधुनिक शिक्षा के मूल्यों को परिभाषित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2023 (कुछ प्रावधानों में NEP 2020 का अद्यतन भाव) इस दिशा में एक महत्वपूर्ण नीति-दस्तावेज है, जो भारतीय शिक्षा प्रणाली में बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व-विकास को प्रमुख स्थान देता है। नीति में विशेष रूप से यह निर्देशित किया गया है कि विद्यालयी शिक्षा न केवल बौद्धिक विकास बल्कि भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक परिपक्वता की भी आधारशिला बने (NEP, 2023, अध्याय 4)। इस नीति का केन्द्रीय विचार यह है कि विद्यार्थी जीवन भर के लिए सीखने वाली क्षमताओं को अर्जित करें, जिससे वे जीवन की वास्तविक चुनौतियों का सामना कर सकें।

नैतिक शिक्षा और जीवन कौशल दोनों ही ऐसे घटक हैं जो बालक के व्यवहार को दीर्घकालीन दिशा प्रदान करते हैं। नैतिक शिक्षा का उद्देश्य केवल नैतिक सिद्धांतों का बोध कराना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में मूल्य-आधारित जीवन के प्रति आंतरिक प्रेरणा उत्पन्न करना है। आज के डिजिटल और वैश्वीकरण वाले युग में जहाँ मूल्य-विचलन, सामाजिक दबाव, तनाव, और तीव्र प्रतिस्पर्धा लगातार बढ़ रही है, वहीं नैतिक शिक्षा का महत्व और भी गहन हो जाता है। इसी प्रकार जीवन कौशल जैसे—

समस्याओं का समाधान, निर्णय लेने की क्षमता, सृजनात्मक चिंतन, संप्रेषण कौशल और भावनात्मक संतुलन—बच्चों को व्यक्तित्वगत सुदृढ़ता प्रदान करते हैं (WHO, 2020)।

समग्र बाल विकास का उद्देश्य बहुआयामी अधिगम के माध्यम से बालक में संतुलित व्यक्तित्व निर्माण करना है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास शामिल हैं। जैसे-जैसे शिक्षा का स्वरूप कौशल-आधारित और अनुभवपरक होता जा रहा है, विद्यालयों में नैतिक शिक्षा एवं जीवन कौशल का समन्वित मॉडल आवश्यक हो गया है। इस अध्ययन में समग्र बाल विकास की अवधारणा, नैतिक शिक्षा का महत्व, NEP 2023 में जीवन कौशलों का औपचारिक समावेश, तथा विद्यालय स्तर पर इन दोनों का एकीकरण विस्तृत रूप से विवेचित किया गया है।

इस शोध में प्रयुक्त साहित्य, राष्ट्रीय दस्तावेज, संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्टें, और शैक्षिक शोध अध्ययन स्पष्ट करते हैं कि नैतिक शिक्षा एवं जीवन कौशल की अनदेखी किसी भी शिक्षण प्रक्रिया को अधूरा बना देती है। इसलिए, यह आवश्यक है कि नीति स्तर पर किए गए प्रावधानों को विद्यालयी शिक्षा में प्रभावी रूप से रूपांतरित किया जाए, जिससे विद्यार्थी न केवल “अच्छे शिक्षार्थी” बल्कि “अच्छे मनुष्य” भी बन सकें (Kumar, 2022)। यही अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है और इसी दृष्टिकोण से आगामी भागों में विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत की गई है।

2. समग्र बाल विकास की अवधारणा (Comprehensive Child Development)

समग्र बाल विकास की अवधारणा

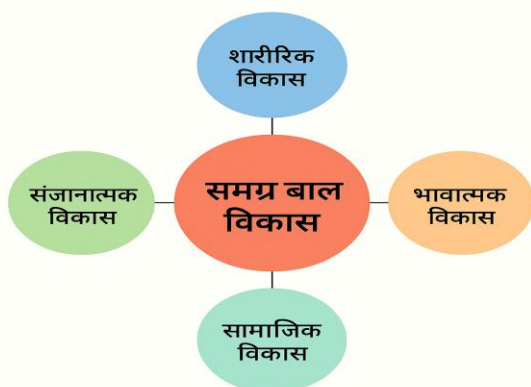


Figure 1: समग्र बाल विकास मॉडल

इस अवधारणा के पाँच प्रमुख उप घटक

2.1 शारीरिक विकास (Physical Development)

शारीरिक विकास बालक के समग्र विकास की प्रथम आधारशिला है, जिसमें शरीर की वृद्धि, पोषण, मोटर कौशलों का विकास, शारीरिक स्वास्थ्य और शारीरिक कार्यक्षमताएँ सम्मिलित हैं। शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में शारीरिक सक्रियता बच्चों के संज्ञानात्मक एवं भावनात्मक विकास से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है। अनुसंधानों से यह पाया गया है कि सक्रिय खेलकूद बच्चों की एकाग्रता, ध्यान, निर्णय-क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं (Singh, 2020)। विद्यालयों में यदि शारीरिक शिक्षा का विधिवत और वैज्ञानिक रूप से आयोजन किया जाए तो विद्यार्थी न केवल स्वस्थ जीवनशैली अपनाते हैं, बल्कि अनुशासन, टीमवर्क, सहयोग और नेतृत्व जैसे जीवन मूल्यों को भी सीखते हैं।

बालवाड़ी और प्राथमिक स्तर पर मोटर कौशलों के विकास के लिए खेल-आधारित अधिगम आवश्यक माना गया है। दौड़ना, कूदना, पकड़ना, फेंकना, संतुलन बनाना और अन्य गतिविधियाँ मस्तिष्क-तंत्र को सक्रिय करती हैं। WHO (2020) के अनुसार, 5-17 आयु वर्ग के बच्चों को प्रतिदिन कम से कम 60 मिनट मध्यम से तीव्र शारीरिक गतिविधि

करनी चाहिए। भारत की शिक्षा प्रणाली में विद्यालयों को इस मानक को सुनिश्चित करने की दिशा में पर्याप्त प्रयास करने की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त, पोषण भी शारीरिक विकास का महत्वपूर्ण घटक है। कुपोषण न केवल शरीर बल्कि संज्ञानात्मक विकास को भी प्रभावित करता है। इसलिए मध्याह्न भोजन योजना (MDM), पोषण कार्यक्रम, विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम आदि को शिक्षा के साथ जोड़ना आवश्यक है। NEP 2023 ने भी स्वास्थ्य और पोषण को बाल विकास के अनिवार्य भाग के रूप में प्रस्तुत किया है (NEP, 2023, पृ. 22)। अतः शारीरिक विकास केवल स्वास्थ्य का विषय नहीं, बल्कि शिक्षा का मूलधार है।

2.2 संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development)

संज्ञानात्मक विकास वह प्रक्रिया है जिसमें बालक ज्ञान, सोच, समस्या-समाधान, स्मृति, भाषा और बौद्धिक कार्यक्षमता विकसित करता है। जीन पियाजे के सिद्धांत के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास क्रमबद्ध और अनुभवाधारित होता है; बालक निरंतर अपने परिवेश के साथ अंतःक्रिया द्वारा ज्ञान का निर्माण करता है (Piaget, 1973)। आधुनिक शिक्षा में यह माना जाता है कि संज्ञानात्मक विकास को सुदृढ़ करने के लिए शिक्षण विधियों का अनुभवपरक, गतिविधि-आधारित और समस्या-केन्द्रित होना अनिवार्य है।

संज्ञानात्मक विकास का संबंध केवल शैक्षणिक उपलब्धियों से नहीं है, बल्कि तार्किक चिंतन, विश्लेषणात्मक क्षमता, रचनात्मकता और निर्णय-क्षमता से भी है। NEP 2023 ने इस पर विशेष बल दिया है कि सीखना केवल तथ्यों का संग्रह न होकर, समझ और अनुप्रयोग आधारित होना चाहिए। उदाहरणस्वरूप, गणित और विज्ञान में वास्तविक जीवन सन्दर्भों का प्रयोग, भाषा शिक्षण में संवाद आधारित गतिविधियाँ, और सामाजिक विज्ञान में अन्वेषण आधारित अधिगम संज्ञानात्मक विकास को प्रोत्साहित करते हैं।

डिजिटल युग में संज्ञानात्मक कौशलों का दायरा और भी विस्तृत हो गया है। सूचना-साक्षरता, डेटा-व्याख्या, डिजिटल विश्लेषणात्मक क्षमता और आलोचनात्मक चिंतन (critical

thinking) ऐसे कौशल हैं जो विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं। शोध बताते हैं कि डिजिटल प्लेटफॉर्म पर इंटरैक्टिव लर्निंग संज्ञानात्मक लचीलापन (cognitive flexibility) को बढ़ाती है (NITI Aayog, 2022)।

संज्ञानात्मक विकास का सीधा संबंध जीवन कौशलों से है। जो विद्यार्थी समस्या-समाधान, तर्क, निर्णय और विश्लेषणात्मक सोच में दक्ष होते हैं, वे जटिल परिस्थितियों को बेहतर ढंग से संभालते हैं। इसलिए शिक्षा में संज्ञानात्मक विकास को मूल्य एवं कौशल विकास के साथ एकीकृत करना आवश्यक है, जो समग्र बाल विकास की नींव बनाता है।

2.3 भावनात्मक विकास (Emotional Development)

भावनात्मक विकास में आत्म-जागरूकता, भावनात्मक संतुलन, सहानुभूति, आत्मविश्वास और तनाव-प्रबंधन जैसी क्षमताएँ शामिल हैं। बच्चों के लिए भावनात्मक परिपक्वता आवश्यक है क्योंकि यह उनके सामाजिक व्यवहार, सीखने की क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। अनुसंधान बताते हैं कि जिन बच्चों में भावनात्मक जागरूकता विकसित होती है वे संघर्ष समाधान, सहयोग, तथा सकारात्मक संबंधों की स्थापना में अधिक सफल होते हैं (Sharma, 2021)।

विद्यालय वातावरण भावनात्मक विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है। शिक्षक बच्चों की भावनाओं को समझते हुए उन्हें सुरक्षित वातावरण प्रदान करते हैं, जहाँ वे स्वयं को अभिव्यक्त कर सकें। NEP 2023 ने सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (Social Emotional Learning–SEL) को विद्यालयी पाठ्यचर्या का मुख्य घटक बताया है। कक्षागत गतिविधियाँ जैसे कहानी-वाचन, समूह चर्चा, नाट्याभिनय, ध्यान-योग, और माइंडफुलनेस बच्चों में भावनात्मक स्थिरता विकसित करती हैं।

भावनात्मक विकास का जीवन कौशलों से गहरा संबंध है। आत्म-नियमन (self-regulation), सहानुभूति (empathy), और अवधारणात्मक जागरूकता (meta-cognition) ऐसे कौशल हैं जो बच्चों को तनावपूर्ण परिस्थितियों में संतुलित

निर्णय लेने में सक्षम बनाते हैं। UNICEF (2021) के अनुसार भावनात्मक शिक्षा का अभाव किशोरों में व्यवहारिक चुनौतियाँ, आक्रामकता, और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ा देता है। इसलिए विद्यालयों में सुरक्षित, समावेशी और संवेदनशील वातावरण विकसित करना अत्यधिक आवश्यक है।

सकारात्मक शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, परामर्श सेवाएँ, समकक्ष सहयोग, तथा मूल्य-आधारित गतिविधियाँ भावनात्मक विकास को मजबूत करती हैं। यह विकास विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को संतुलित, संवेदनशील, और सामाजिक रूप से ज़िम्मेदार बनाता है।

2.4 सामाजिक विकास (Social Development)

सामाजिक विकास में बच्चों का दूसरों के साथ संवाद, सहयोग, टीमवर्क, सामाजिक नियमों को समझना, सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक सहिष्णुता जैसी क्षमताएँ शामिल हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, सामाजिक विकास बालक की पहचान, आत्म-बोध और सामाजिक जुड़ाव की नींव है (Vygotsky, 1978)। विद्यालय सामाजिक विकास का सर्वाधिक प्रभावकारी स्थल है क्योंकि यहाँ बच्चे विविध पृष्ठभूमियों वाले साथियों के साथ संवाद करते हैं।

समूह कार्य, सहयोगात्मक अधिगम, सामुदायिक सेवा, टीम-गेम्स और सांस्कृतिक गतिविधियाँ बच्चों में सामाजिक दक्षताओं को विकसित करती हैं। NEP 2023 सामाजिक उत्तरदायित्व, संविधानिक मूल्यों, और सामाजिक सामंजस्य पर विशेष बल देती है। बच्चों को बहुसांस्कृतिक अनुभव प्रदान करना, लोकतांत्रिक आदर्शों की समझ विकसित करना, और सामुदायिक सहभागिता के अवसर देना सामाजिक विकास के प्रमुख साधन हैं।

सामाजिक कौशल जीवन कौशलों के सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक हैं। बच्चों के लिए सहयोग, संवाद कौशल, संघर्ष समाधान तथा सहानुभूति सीखना अत्यंत आवश्यक है ताकि वे भविष्य के कार्यस्थलों और सामाजिक जीवन में प्रभावी व्यवहार कर सकें। अनुसंधान बताते हैं कि सामाजिक रूप से दक्ष बच्चे बेहतर नेतृत्व क्षमता प्रदर्शित

करते हैं और सकारात्मक संबंध स्थापित कर पाते हैं (Mehta, 2020)।

इस प्रकार सामाजिक विकास विद्यार्थियों को सामाजिक संरचनाओं को समझने, दूसरों के दृष्टिकोण का सम्मान करने और उत्तरदायी नागरिक बनने की दिशा में तैयार करता है। यह समग्र बाल विकास की अनिवार्य परत है।

2.5 नैतिक विकास (Moral Development)

नैतिक विकास बच्चों में सही-गलत का बोध, नैतिक निर्णय-क्षमता, मूल्य-आधारित व्यवहार, और सामाजिक उत्तरदायित्व की चेतना विकसित करता है। कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत के अनुसार यह विकास क्रमिक होता है और अनुभव, संवाद, तथा सामाजिक परिवेश से प्रभावित होता है (Kohlberg, 1981)। आज की शिक्षा चुनौतियों जैसे डिजिटल दुरुपयोग, सामाजिक-मीडिया प्रभाव, प्रतिस्पर्धा, और नैतिक दुविधाओं को देखते हुए नैतिक विकास अत्यंत आवश्यक हो गया है।

नैतिक शिक्षा बच्चों में करुणा, ईमानदारी, अनुशासन, धैर्य, कर्तव्य-बोध और मानवीय संवेदनाएँ उत्पन्न करती है। NEP 2023 ने नैतिक शिक्षा को मूलभूत शिक्षा का मुख्य आधार माना है और “मूल्य-आधारित शिक्षा” तथा “चरित्र निर्माण” को शिक्षा के उद्देश्य के रूप में परिभाषित किया है (NEP, 2023, अध्याय 6)। विद्यालयों में कहानी-वाचन, जीवन आदर्शों के अध्ययन, प्रोजेक्ट-आधारित मूल्य शिक्षा, प्रार्थना सभा, और सामुदायिक सेवा गतिविधियाँ नैतिक विकास को सुदृढ़ करती हैं।

नैतिक विकास और जीवन कौशल गहराई से जुड़े हैं। नैतिक निर्णय-क्षमता समस्याओं के समाधान और निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करती है। उदाहरणस्वरूप, कोई बच्चा यदि नैतिक आधारों को समझता है, तो वह ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ व्यवहार करेगा। इस प्रकार नैतिक शिक्षा न केवल सामाजिक और व्यक्तिगत आयामों को प्रभावित करती है, बल्कि संपूर्ण शिक्षा तंत्र का आधार बनती है।

3. नैतिक शिक्षा का महत्व

नैतिक शिक्षा आधुनिक शिक्षा प्रणाली की अनिवार्य आवश्यकता है क्योंकि यह विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण, नैतिक विवेक, सामाजिक उत्तरदायित्व, और मानवीय मूल्यों को विकसित करती है। ज्ञान की तीव्रता और तकनीकी प्रगति के इस युग में जहाँ जानकारी सहज उपलब्ध है, वहीं मूल्य-आधारित आचरण और नैतिक निर्णय लेना अधिक जटिल हो गया है। इसलिए विद्यालयी शिक्षा में सुव्यवस्थित नैतिक शिक्षा का समावेश समय की महत्वपूर्ण मांग है।

नैतिक शिक्षा बच्चों के व्यक्तित्व को स्थिर और संतुलित बनाती है। यह आत्म-अनुशासन, आत्म-नियमितता, सत्यनिष्ठा, करुणा और मानवता जैसे मूल्यों को जीवन में व्यावहारिक रूप से अपनाने की क्षमता प्रदान करती है। अनुसंधान दर्शाता है कि जिन बच्चों में नैतिक जागरूकता विकसित होती है, वे सामाजिक परिस्थितियों में अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण और संतुलित व्यवहार प्रदर्शित करते हैं (Sharma, 2021)। नैतिक शिक्षा सामाजिक सदभाव, सहयोग और शांति की भावना को भी सुदृढ़ करती है।

वैश्वीकरण और डिजिटलाइजेशन ने विद्यार्थियों के सामने नई नैतिक चुनौतियाँ प्रस्तुत कर दी हैं। साइबर-बुलिंग, डिजिटल लत, फेक न्यूज़, गोपनीयता का उल्लंघन, और वर्चुअल पहचान के संकट जैसे मुद्दों से निपटने के लिए बच्चों को नैतिक विवेक की आवश्यकता है। इसलिए डिजिटल नैतिकता, मीडिया साक्षरता और जिम्मेदार ऑनलाइन व्यवहार को भी नैतिक शिक्षा का हिस्सा बनाया जाना चाहिए (UNESCO, 2022)।

विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को केवल धार्मिक या सांस्कृतिक कथाओं का समुच्चय मानकर पढ़ाना पर्याप्त नहीं है। यह आवश्यक है कि इसे आधुनिक सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों और वास्तविक जीवन स्थितियों के साथ जोड़कर पढ़ाया जाए। उदाहरणस्वरूप, सामाजिक सेवा कार्य, पर्यावरण संरक्षण गतिविधियाँ, सामुदायिक सहभागिता, और सेवा-अधिगम (service learning) जैसी गतिविधियाँ नैतिक मूल्यों को आचरण में परिणत करती हैं।

NEP 2023 ने नैतिक शिक्षा को शिक्षा प्रणाली के केन्द्र में रखा है। नीति के अनुसार, "चरित्र निर्माण" शिक्षा के उद्देश्य का मूल तत्व है। इसमें राष्ट्रीय मूल्यों, संविधानिक आदर्शों, वैश्विक नागरिकता, सहअस्तित्व और संस्कृतियों के प्रति सम्मान को आवश्यक माना गया है (NEP, 2023, अध्याय 3)। इन सभी का अंतिम उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी केवल अकादमिक रूप से सक्षम ही नहीं, बल्कि नैतिक रूप से सुदृढ़ और संवेदनशील नागरिक बन सकें।

नीति में यह भी कहा गया है कि जीवन कौशल शिक्षा केवल सहगामी गतिविधि न होकर पाठ्यचर्या का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए। इसके लिए अनुभवात्मक अधिगम, प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण, खेल-आधारित अधिगम, और कला-एकीकृत शिक्षा को महत्व दिया गया है। जीवन कौशलों का विकास विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्म-जागरूकता, निर्णय-क्षमता और सामाजिक दक्षता को मजबूत करता है।

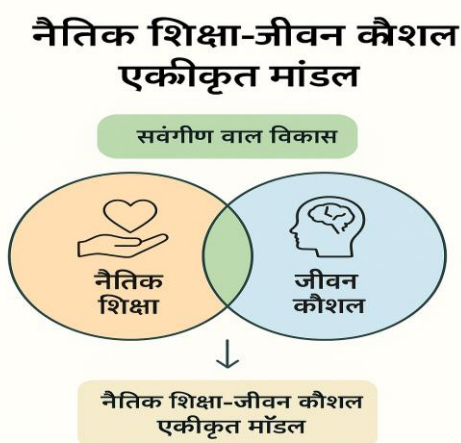


Figure 2: नैतिक शिक्षा-जीवन कौशल एकीकृत मांडल

4. NEP 2023 में जीवन कौशलों का समावेश

NEP 2023 ने जीवन कौशलों (Life Skills) को शिक्षा का अनिवार्य घटक माना है। नीति में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि विद्यालयी शिक्षा केवल विषय ज्ञान पर आधारित नहीं होनी चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों में ऐसी क्षमताएँ विकसित होनी चाहिए जो उन्हें वास्तविक जीवन परिस्थितियों में प्रभावी रूप से निर्णय लेने, समस्याओं का समाधान करने और सामाजिक जीवन में सकारात्मक भूमिका निभाने योग्य बनाएं। जीवन कौशलों में संप्रेषण कौशल, समस्या-समाधान, सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, भावनात्मक संतुलन, टीमवर्क, नेतृत्व, सहानुभूति, डिजिटल साक्षरता और वित्तीय साक्षरता जैसे कौशल शामिल हैं (NEP, 2023)।

NEP 2023 के जीवन कौशल ढाँचे का आरेख



Figure 3: NEP 2023 के जीवन कौशल ढाँचे का आरेख

इसके मुख्य उपघटक प्रस्तुत हैं:

4.1 संप्रेषण कौशल (Communication Skills)

संप्रेषण कौशल NEP 2023 का एक प्रमुख कौशल है जिसमें मौखिक-अमौखिक अभिव्यक्ति, प्रस्तुतीकरण क्षमता, सुनने का कौशल और सामाजिक संवाद शामिल हैं। यह विद्यार्थियों को सामाजिक और शैक्षणिक दोनों क्षेत्रों में सक्षम बनाता है।

4.2 आलोचनात्मक एवं सृजनात्मक चिंतन (Critical and Creative Thinking)

नीति में यह कहा गया है कि रटने पर आधारित शिक्षा भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकती। इसलिए विद्यार्थियों में विश्लेषण, तर्क, नवाचार और रचनात्मकता विकसित की जानी चाहिए।

4.3 डिजिटल एवं मीडिया साक्षरता (Digital and Media Literacy)

डिजिटल युग में तकनीक का सुरक्षित और नैतिक उपयोग अत्यंत आवश्यक है। विद्यार्थियों को डिजिटल उपकरणों, ऑनलाइन सुरक्षा और मीडिया-विश्लेषण की क्षमताओं से सुसज्जित किया जाना चाहिए।

4.4 सामाजिक एवं भावनात्मक कौशल (Social and Emotional Skills)

सहानुभूति, टीमवर्क, सहयोग, भावनात्मक संतुलन, और तनाव-प्रबंधन जैसे कौशल संपूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक हैं। NEP 2023 SEL (Social Emotional Learning) को अनिवार्य बनाकर इस दिशा में बड़ा कदम है।

5. विद्यालयी स्तर पर जीवन कौशल तथा नैतिक शिक्षा का एकीकरण

विद्यालय जीवन कौशल और नैतिक शिक्षा के सबसे उपयुक्त स्थल हैं क्योंकि यहाँ शिक्षण-अधिगम के दौरान विद्यार्थियों को वास्तविक सामाजिक अनुभव और बहुआयामी परिस्थितियों का सामना करने का अवसर मिलता है। विद्यालयों में मूल्य शिक्षा को पृथक विषय के रूप में प्रस्तुत करने की बजाय इसे प्रत्येक विषय और गतिविधि के माध्यम से एकीकृत रूप में पढ़ाया जाना अधिक प्रभावी माना जाता है। NEP 2023 भी इसी समेकित दृष्टिकोण का समर्थन करती है।

जीवन कौशल शिक्षा को विद्यालय की दिनचर्या, पाठ्यचर्या और सहगामी गतिविधियों में सम्मिलित किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप समूह-कार्य, प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षण, सामुदायिक सेवा, खेल और कला गतिविधियाँ बच्चों में सामाजिक कौशल, नेतृत्व, सहानुभूति और समस्या-समाधान क्षमता विकसित करती हैं। इसी प्रकार नैतिक शिक्षा को कहानी-वाचन, जीवन आदर्शों के अध्ययन, वाद-विवाद, पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों और सेवा-अधिगम के माध्यम से व्यावहारिक रूप में स्थापित किया जा सकता है। विद्यालयों में भावनात्मक परामर्श (counseling), करियर मार्गदर्शन, तथा समकक्ष-समर्थन तंत्र जीवन कौशलों के विकास को और भी सुदृढ़ बनाते हैं।

नैतिक शिक्षा और जीवन कौशल में अंतःसम्बंध भी स्पष्ट है। उदाहरणस्वरूप, नैतिक निर्णय-क्षमता समस्या-समाधान क्षमता को दिशा देती है। सहानुभूति संप्रेषण और टीमवर्क को सुदृढ़ करती है। आत्म-अनुशासन और ईमानदारी नेतृत्व को परिशोधित करती है। इसलिए विद्यालयों को जीवन कौशल और नैतिक शिक्षा के एकीकृत मॉडल को अपनाना चाहिए।

नीचे इसके उपघटक लगभग 100 शब्द प्रत्येक में दिये गए हैं:

5.1 मूल्य आधारित पाठ्यचर्या (Value-Integrated Curriculum)

पाठ्यचर्या में मूल्यों को विषयगत सामग्री, उदाहरणों और अनुभवों के माध्यम से जोड़ा जाता है। शिक्षक प्रत्येक विषय में नैतिक संदर्भों को स्वाभाविक रूप से शामिल कर सकते हैं। जैसे विज्ञान में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व, सामाजिक विज्ञान में संविधानिक मूल्य, भाषा में जीवन आदर्शों की कहानियाँ।

5.2 अनुभवात्मक एवं प्रोजेक्ट आधारित अधिगम

प्रोजेक्ट, फील्ड विज़िट, सर्वेक्षण गतिविधियाँ विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन परिस्थितियों से परिचित कराती हैं। इससे उनकी समस्या-समाधान, संवाद, नेतृत्व और निर्णय-क्षमता मजबूत होती है।

5.3 सहगामी गतिविधियों का समावेश

प्रार्थना सभा, खेल, नाटक, संगीत, भ्रमण और समसामयिक चर्चाएँ नैतिक शिक्षा को व्यावहारिक बनाती हैं। इन गतिविधियों से बच्चों में टीमवर्क, अनुशासन और सहयोग विकसित होता है।

5.4 विद्यालय-समुदाय सहभागिता

सामुदायिक सेवा, स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, वृद्धाश्रम भ्रमण और सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम बच्चों में सामाजिक उत्तरदायित्व, करुणा और नैतिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देते हैं।

5.5 तालिका: विद्यालयी स्तर पर जीवन कौशल एवं नैतिक शिक्षा का एकीकरण

क्षेत्र	एकीकृत रणनीतियाँ	अपेक्षित प्रभाव
कक्षा शिक्षण	मूल्य-आधारित उदाहरण, चर्चा, नैतिक दुविधाएँ	नैतिक विवेक, आलोचनात्मक चिंतन
सहगामी गतिविधियाँ	खेल, नाटक, सेवा- अधिगम	नेतृत्व, सहयोग, सहानुभूति
डिजिटल लर्निंग	डिजिटल नैतिकता, मीडिया साक्षरता	सुरक्षित एवं जिम्मेदार तकनीकी व्यवहार
समुदाय सहभागिता	सामाजिक सेवा कार्यक्रम	सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवता

6. भविष्य की संभावनाएँ

NEP 2023 के बाद जीवन कौशल और नैतिक शिक्षा का क्षेत्र व्यापक संभावनाओं से भरा है। भविष्य में विद्यालयों में मूल्य-आधारित डिजिटल सामग्री, AI-आधारित परामर्श प्रणाली, SEL-आधारित शिक्षण मॉडल, और बहु-आयामी मूल्यांकन प्रणाली विकसित होने की संभावना है। शिक्षकों के लिए जीवन कौशल और नैतिक शिक्षा पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम अनिवार्य होंगे। इसके अतिरिक्त विद्यालय-समुदाय साझेदारी मजबूत होगी, जिससे विद्यार्थियों का व्यक्तित्व अधिक मानवीय और उत्तरदायित्वपूर्ण बनेगा। इस प्रकार शिक्षा का लक्ष्य केवल 'सीखना' नहीं, बल्कि 'जीवन के लिए सीखना' बन जाएगा।

8. संदर्भ सूची

1. UNICEF. (2021). Child Development and Learning Report.
2. WHO. (2020). Life Skills Education Framework.
3. NEP. (2023). Government of India, Ministry of Education.
4. Kumar, R. (2022). Value Education in Indian Schools. Delhi: Sage.

5. Sharma, P. (2021). Emotional Learning in Primary Schools. *Journal of Education*, 12(4), 22–35.
6. Piaget, J. (1973). *Child Psychology and Development*. New York: Basic Books.
7. Vygotsky, L. (1978). *Mind in Society*. Harvard University Press.
8. Kohlberg, L. (1981). *Essays on Moral Development*.
9. Mehta, S. (2020). Social Skills and Child Development. *Indian Psychological Review*.
10. UNESCO. (2022). *Ethics and Education in Digital Era*.
11. NITI Aayog. (2022). *Digital Learning for Future India*.
12. Patel, V. (2019). Value Integrated Curriculum. *Journal of Pedagogic Studies*.
13. Singh, A. (2020). Physical Well-being and Learning Outcomes.
14. Kapoor, R. (2021). Social Emotional Learning Practices in Schools.
15. Bhatia, M. (2022). *Life Skills Approach in Indian Education*. Oxford University Press.
- 7amleh. (2017). *Internet freedoms in Palestine: Mapping of digital rights violations and threats*. https://7amleh.org/wpcontent/uploads/2018/01/7amleh_Internet_Freedoms_in_Palestine.pdf, Accessed Sep 2023
- Amro, B. (2018). Cybercrime as a matter of the art in palestine and its effect on individuals. *International Journal of Wireless and Microwave Technologies (IJWMT)*, 8(5), 19–26. <https://doi.org/10.5815/ijwmt.2018.05.03>
- Anderson, E. (1999). *Code of the street: Decency, violence, and the moral life of the inner city*. W.W. Norton.
- Bae, S. M. (2017). The influence of strain factors, social control factors, self- control, and computer use on adolescent cyber delinquency: Korean National Panel Study. *Children and Youth Services Review*, 78, 74–80. <https://doi.org/10.1016/j.childyouth.2017.05.008>
- Baumer, E. P. (2002). Neighborhood disadvantage and police notification by victims of violence. *Criminology*, 40, 579–617.
- Bidgoli, M., Knijnenburg, B. P., & Grossklags, J. (2016). When cybercrimes strike undergraduates. In *2016 APWG Symposium on Electronic Crime Research (eCrime)*, Toronto, ON, Canada, 2016 (pp. 1–10). <https://doi.org/10.1109/ECRIME.2016.7487948>
- Brands, J., & van Doorn, J. (2021). The measurement, intensity and determinants of fear of cybercrime: A systematic review. *Computers in Human Behavior*, 127, 107082. <https://doi.org/10.1016/j.chb.2021.107082>